International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628; Print ISSN: 2664-861X
Received: 13-03-2020; Accepted: 12-04-2020; Published: 27-04-2020
Volume 2; Issue 1; Apr 2020, Page No. 42-45

विश्व व्यापार संगठन और भारतः चुनौतियों एवं सम्भवनाएं

डॉ. पुष्पा देवांगन[1], डॉ. बलभद्र प्रसाद देवांगन[2]
[1] प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, के. पी. महाविद्यालय, बंधापाली, सारंगढ, रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत
[2] प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, अशोका महाविद्यालय, उम्मेदपुर, सारंगढ, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
वर्तमान युग बजारोन्मुखी अर्थव्यवस्था पर आधारित है और समस्त राष्ट्र इसे विकास आघार बनाया है। बल्कि यदि हम यह कहें कि राष्ट्र के विकास का आधार बाजार है, तो कोई अतिस्योक्ति नही होगी। और इसी बाजार के सफल संचालन के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओ यथा गैट, विश्व व्यापार संगठन अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोश जैसी संथाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसलिए भारत जैसे विश्व के समस्त राट्रों ने ऐसी संस्थाओं में अपनी आस्था तथा विश्वास प्रकट करता है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियॉ परिवर्तित होती नजर आती है। इसके बहुत सारे कारण गिनाए जा सकते है। जैसे–शीत युद्ध की उत्पत्ति, एशिया, अफ्रिका तथा लैटिन अमेरिकी राष्ट्रों से उपनिवेशवाद की समाप्ति, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का जन्म, अंतर्राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोश का बनना, संयुक्त राष्ट्र संघ का बनना। इसके आलावा बहुत से ऐसे कारण है जो विश्व की परिस्थितियों को परिवर्तित किया इसमें सबसे प्रमुख है– उदारीकरण, भूमण्डलीकरण और निजीकरण जिनको GLIP कहा गया। वस्तुतः इसकी शुरूआत 1948 के GATT के समय से शुरू हो चुका था। लेकिन इसका स्पष्ट रूप सन् 1995 में विश्व व्यापार संगठन के रूप में दिखाई पडता है। जब इसे 1 जनवरी 1995 को शुरू किया गया। तब इस संगठन से उम्मीदें बहुत ज्यादा थी। क्योंकि इसके उद्देश्य स्पष्ट थे–व्यापार में अडचने खत्म करना, संरक्षणवाद पर लगाम कसना और विकासशील देशों को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुॅचने का मौका देना। लेकिन हुआ कुछ अलग ही राजनीति गुटबाजी, कड़क संरचना तेज कदम, इन मुद्दों से जुडे सवालों का विश्व व्यापार संगठन के पास कोई जवाब नही है। आज विश्व व्यापार संगठन के 20 साल पुरे हो चुके हैं, लेकिन इस संगठन को जिस अवस्था को प्राप्त करना था। उसे प्राप्त करने में नाकाम रहा है। इसका कारण विकसित एवं विकासशील देशों के बीच मतांतर का है। जिसका प्रभाव इस संगठन पर दिखाई पड़ रहा है। जिसका विश्लेषण करना अत्यन्त आवश्यक है।

मुख्य शब्दः बजारोन्मुखी अर्थव्यवस्था, भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, विश्व व्यापार संगठन, अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, सीमा शुल्क, पर्यावरण निवेश, संरक्षणवाद, संस्कृतिक मतभेद, बहुर्राष्ट्रीय कम्पनियॉ

विश्व व्यापार संगठन की ऐतिहासिक पृष्टभूमि : 1930 की विश्व व्यापी मंदी के दौरान अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का विकास अस्त–व्यस्त हो गया था, और विभिन्न देशों ने अपने–अपने हितों की रक्षा के लिए आयात–निर्यात का सहारा लेना प्रारंभ कर दिया था। इस आर्थिक मंदी से उबरने के लिए नवम्बर 1945 में अमेरिका में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तथा रोजगार के विस्तार के उद्देश्य से अनेक राष्ट्रों के द्वारा प्रस्ताव प्रकाशित किये गये अंततः 30 नवम्बर 1947 को जेनेवा स्टिजरलैण्ड में 23 देशों द्वारा सीमा शुल्कों से सम्बन्धित एक सामान्य समझौते पर हस्ताक्षर किये गये इसी समझौतों को ''गैट'' (General Agreement on Trade and Tarriff) के नाम से जाना जाता है। यह समझौता 1 जनवरी 1948 से लागु हुआ। प्रारंभ से गैट की स्थापना एक अस्थायी प्रबन्ध के रूप में की गई थी, किन्तु कालान्तर में यह एक स्थायी समझौता बन गया। गैट का मुख्यालय जेनेवा में था। 1947 से 1994 तक गैट के कुल आठ सम्मेलन हुए। आठवॉ सम्मेलन 1986 से 1994 तक चला जिसे उरूग्वे दौर के नाम से जाना जाता है। इस दौर की विभिन्न बैठकें माट्रियल, जेनेवा, वुशेलस, टोक्यो, अनेसी, में सम्पन्न हुई। जिसमें गैट समस्या के समाधान का दायित्व सौपा गया। 20 दिसम्बर 1991 को आर्धर डंकन ने नए सिरे से सदस्य देशों के सामने आपसी सहमति के लिए एक विस्तृत दस्तावेज प्रस्तुत किया, और सदस्य राष्ट्रों को सहमति देने की बात कही, सदस्य देशों द्वारा इसे 15 दिसम्बर 1993 को जेनेवा में स्वीकृति प्रदान की गई। 15 अप्रैल 1994 को मोरक्को के माराकश शहर में 123 सदस्यों द्वारा समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए गए। इस प्रकार गैट के स्थापना पर 1 जनवरी 1995 से विश्व व्यापार संगठन अस्तित्व में आ गया। 1 जनवरी 1995 से अस्तित्व में आये विश्व व्यापार संगठन को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है। विश्व व्यापार संगठन बनने के बाद अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सदस्य राष्ट्रों के द्वारा अपनी आस्था एवं विश्वास के सांथ विकास प्रक्रिया को आगे बढ़ानें का मौमा मिला। विश्व व्यापार संगठन के बनने के बाद अनेक–अनेक देश तत्काल प्रभाव के साथ इसमें शामिल हो गए। इसका मुख्यालय स्विटजरलैण्ड के जेनेवा नगर में स्थित है। विश्व व्यापार संगठन के जन्म के सांथ विश्व व्यापी आर्थिक सहयोग के नए युग की शुरूआत हुई, जिसमें सदस्य देशों की एक न्यायोचित और आधिक खुली बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था में अपने लाभ और हित साधन के लिए कार्य करने की व्यापक भावना परिलक्षित होती है। विश्व व्यापार संगठन के जन्म की घोषणा इन शब्दों में की गयी– यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि है, जो विश्व अर्थव्यवस्था को प्रबल करेगी, और सारी दुनिया में अधिक व्यापार, अधिक पूॅजी निवेश, अधिक रोजगार और अधिक आय के अवसर पैदा करेगी।

विश्व व्यापार संगठन और भारत : भारत 1948 के गैट के संस्थापक सदस्यों में से एक था, और विश्व व्यापर संगठन के अस्तित्व में आने के बाद इसके संस्थापक सदस्यों में से एक है। भारत ने सदैव ही इन संस्थाओं में अपनी आस्था प्रकट करता आ रहा है। चूंकी भारत सहित तमाम विकासशील राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था का आधार विश्व व्यापार संगठन जैसी संथाए ही है जिसके माध्यम से व्यापार व्यवस्था को मजबूती प्रदान की जा

सकती है। ऐसा विषय विशेषज्ञों का मानना है। जहां तक भारत का प्रश्न हैं, भारत प्रारंभ से ही गैट की वार्ताओं से जुडा रहा। परंतु विकासशील देश हमेशा गैट समझौतों के पक्षपातपूर्ण रवैये के विरूद्ध थे। इसलिए भारत एवं अन्य विकासशील देश हमेशा इस व्यवस्था को समाप्त करके स्थाई अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संगठन बनाने के पक्षधर थे। इसी मांग को देखते हुए 1963 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने एक समिति का गठन का किया था, जिसमें भारत का प्रतिनिधि भी सम्मिलित था इस समिति ने संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन (अंकटाड) संस्था के गठन का सुझाव दिया, तथा इसे संयुक्त राष्ट्र सचिवालय का अभिन्न अंग बनाने की सिफारिश की थी, ताकि इसे अमेरिका कांग्रेस के वीटो से मुक्त रखा जा सके। 1964 में अंकटाड की स्थापना की गयी थी। अंकटाड जैसी संस्था बनने के बाद विकासशील देश (समूह 77) अपने–अपने हितों के लिए जोर देने लगे। भारत के प्रयत्नों के फलस्वरूप अंकटाड का महत्व बढ़ता गया, और जी. 77 एवं जी. 7 के देशों को प्रदान की गई रियायतों में मतभेद रहा, और इसी का फायदा विकसित राष्ट्रें ने इठाना शुरू कर दिया। गैट एवं वश्व व्यापार संगठन के माध्यम से उत्पन्न हुए गतिरोधों को दूर करने के लिए भारत एवं अन्य विकासशील राष्ट्रों द्वार अथक प्रयत्न किया गया। लेकिन ये गतिरोध और बढते गए। गैट एवं विश्व व्यापार संगठन के सभी सम्मेलनों में विकसित एवं विकासशील राष्ट्रों के बीच खाई और भी गहरी होती चली गई। इस खाई की मतभेद को, अन्तर को कम करना ही विश्व व्यापार संगठन का उद्देश्य रहा।

विश्व व्यापार संगठन के 20 साल : कोई आतिशबाजी नही होगी और बधाई का संगीत भी धीमें ही रहेगा, विश्व व्यापार संगठन डबलू.टी.ओ. 20 साल का हो गया है, लेकिन जश्न का कोई माहौल नही है, संगठन पहचान के संकट से जूझ रहा है। वैश्विक व्यापार और वैश्वीकरण की शुरूवात करने वाले संगठन का नाम है, विश्व व्यापार संगठन, जब उसे पहली जनवरी को 1995 में शूरू किया गया, उम्मीदें थी, व्यपार में अडचनें खत्म करना, संरक्षणवाद पर लगाम करना, और विकासशील देशों को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुचाने का मौका देना। लेकिन हुआ, कुछ अलग ही, राजनीतिक गुटबाजी, कडक संरचना, तेज कदम, इन मुद्दों से जुडे सवालों का संगठन के पास कोई जवाब नही था, और आखिरकार पुराने समय का अवशेष बनकर रह गया। डब्ल्यू.टी.ओ. के महानिदेशक रह चुके पास्कल सेमी कहते हैं। ''डब्ल्यू.टी.ओ. एक मध्यकालीन संगठन है।'' स्थापना के दस साल बाद भी डब्ल्यू. टी.ओं आपनी ही जगह पैर पटकता रहा, वैश्वीकरण पीछे छुट गया, और संगठन की विश्वसहनियता पर सवाल उठने लगे, आखिर ट्रेन कहीं पटरी से उतर गई। भले ही 20 साल में संगठन ने काफी कुछ हासिल किया हो, लेकिन जो हासिल नही कर सका उनकी सूची बहुत लम्बी है, अधिकतर समस्याएं खुद की बनाई हैं, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अधिकार के पोफेसर क्रिस्टियान टीट्ये के मुताबित ''विश्व व्यापार संगठन के नियम नये समय के हिसाब से ढलते नही है।'' और इसका कारण यह है, की सदस्य संगठन की संरचना बदलने को तैयार नही हैं, 160 सदस्य देश जब तक सहमति पर नही पहुच जाते, कोई फैसला नही लिया जाता और वों कभी एकमत होते ही नही हैं। शायद इसलिए पिछले 20 साल में विश्व व्यापार अधिकारों में कोई विकास नही हुआ, लेकिन विदेशों में व्यापार अधिकार के प्रोफेसर आखिर रोगमन का मानना है, कि विश्व व्यापार न बढ़ा हो ऐसा नही हुआ, इसलिए डब्ल्यू.टी.ओ. पैकेट में पहला बडा बदलाव करने का समय भी एक तरह से गुजर चुका है। फैसलों में विकासशील देशों को शामिल नही करने को रोगमन अन्याय मानते है, उसके मुताबित ''विश्व व्यापार संगठन में अब अधिकतर सदस्य विकासशील देशों के है, लेकिन उनके पास अभी जानकारी की कमी है, और स्त्रोत भी नही हैं की वह सौदों के दौरान अपने फायदे के बारे में सोच सके।'' ऐसा लगता है, कि बडे देश ही सिर्फ मानक बना रहें हैं। ब्रोट फ्युर डी बेल्ट नाम के सहायता संगठन के व्हेन हिल्बिग कहते है ''पुराने व्यवसायिक अगुआ यूरोपीय संघ और अमेरिका मुक्त व्यापार को तभी हॉ कहते है, जब उनका फायदा हो, वह अपने आनाज बाजारों को संरक्षणवाद के जरिए सस्ते अनाज बाजारों से बचाते है। विकासशील और गरीब देशों से वह ऐसे सेक्टर में उदारवाद अपनाने को कहते हैं, जहॉ ओ खुद मजबूत है।'' संगठन में विश्वास फिर से मजबूत करने के लिए और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अहम भूमिका निभाने के लिए अमूलचूक परिवर्तन की जरूरत है नई दिशा और नई संरचना की जरूरत है, फैसला लेने की प्रक्रिया भी ऐसी है, कि तेजी से किसी निर्णय पर नही पहुॅचा जा सकता, मूर्खता यह है कि संरचना और संयुक्त राष्ट्र के विशेष संगठन के आंतरिक संविधान में बदलाव सहमति से ही हो सकता है, और यह बहुत ही अव्यवहारिक लगता है, एवेनेट कहते है– ''सहमति का कोई विकल्प नही है, कोई भी ताकतवर देश नही चाहेगा कि उसे हरा दिया जाए।'' भारत में 1990–91 के बाद से अर्थिक उदारीकरण का दौर शुरू हुआ। निजीकरण, उदारीकरण और भूमण्डलीकरण के तीन महामंत्रों से आर्थिक, औद्योगिक नीतियां प्रभावित हुई। इन तीन महामंत्रों के पैरोकार थे, अमेरिका विश्व बैंक और आईएमएफ 1995 के बाद से विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) से देश की व्यापारिक नीतियां काफी हद तक प्रभावित होने लगी। वजह थी 1995 में भारत का विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) का सदस्य बनना। विगत 15 वर्षो से देश में 25 हजार किसान की मौत हुई, रासायनिक खाद, शंकरबीज, कीटनाशक दवाईयां, बैक ऋण से कृषक बर्बादी के कगार पर खड़े हो गए। आयात शुल्क के घट जाने से विदेशी सामान भरतीय बाजार में डंप होने लगे, शुल्क की कमी से दुग्ध उत्पाद व कृषि उत्पाद के सामग्री बाहार से आने लगे। तथा सस्ती दरों पर बाजार में उपलब्ध हो गयी। वैज्ञानिक खेती के नाम पर खेती महंगी हो रही है। किसानो को लागत मूल्य से भी कम कीमतों पर उत्पादन बेचने पडतें है। झारखंण्ड में सालाना 45 लाख टन खाद्यान की खपत है, जबकि उत्पादन मात्र 22 लाख टन ही होता है, शेष अन्य राज्यों पर निर्भर है। दुसरी ओर विश्व बैंक प्रयोजित या संपोषित बड़ी–बड़ी परियोजनाओं का प्रारंभ हुआ, इन बड़ी–बड़ी परियोजनाओं से बड़ी मात्रा में विस्थापन और पलायन हुआ। इस उदारीकरण से सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ भारतीय समाज।

उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का ग्रामीण महिलाओं पर प्रभाव : भारतीय समाज विविधतायुक्त समाज है, जिसमें बहुत से धर्म जाति, भाषा, क्षेत्र, रीति–रिवाज एवं परंपरा का समिश्रण हैं अन्य समाजों की तरह भरतीय समाज भी पितृसत्तात्मक समाज है। जिसमें सांस्कृति व धार्मिक आधार पर तो स्त्रियां सम्मानित, पुज्यनीय, देवी स्वरूप है, लेकिन व्यवहारिक धरातल पर महिलाओं की स्थिति दोयम दर्जे की है। भारतीय महिलाओं की समाजिक संरचना में निर्धारित प्रस्थिति के कारण उनमें शिक्षा का आभाव, समाजिक, आर्थिक भौतिक संपदाओं पर उनकी सहभगिता बहुत ही कम होती है। वे न केवल आर्थिक समाजिक संरचनाओं की शिकर होती है, वस्तुतः पुरा नारी समाज असमानता एवं पिछडेपन का शिकार है। उनके सांथ होने वाले लैंगिक भेदभाव के कारण है, हैसियत समाज में निम्न हैं। वर्तमान में विश्व के विकसित और विकासशील देशें में ग्रामीण महिलाएं मुख्य भूमिका अदा कर रही है। भारत में उदारीकरण का दौर शुरू होने पर महिलाओं की स्थिति में तेजी से परिवर्तन देखने को मिला। देश में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के फैलाव ने बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार दिया। जिनमें महिलाओं की संख्या भी उल्लेखनीय रही।

नए प्रोद्योगिकी और शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं के प्रति समाज की सोच में बलाव लाना शुरू किया, उसकी समाजिक स्थिति के सांथ सांथ आर्थिक स्थिति भी मजबूत हुई। आज सरकार और उद्योग पूरे जोर से विदेशी पूंजी निवेश को आकर्षित करने में लगे है, लेकिन उदारीकरण तथा ढ़ांचागत समायोजन नीतियों के प्रभाव के अध्ययन के संदर्भ में हमें ध्यान रखना होगा, कि भारत एक तीसरी दुनिया का देश है, और काफी समय तक उपनिवेश रहा है। भारत सरकार की ओर से ग्रामीण महिलाओं को सश्क्त बनाने के लिए वर्तमान में काई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, उसमें प्रमुख रूप से राष्ट्रीय महिला साक्षारता मिशन, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार मिशन, राजीव गांधी किशोरी सशक्तिकरण योजना, जननी सुरक्षा योजना, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रमीण रोजगार गारंटी योजना शामिल है। इसके अलावा महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने के लिए सरकार ने वर्ष 1990 में एक बड़ा कदम उठाया इस वर्ष सरकार से राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की जो महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा और उन्हे अपनी भूमिका के प्रति जागरूक करती है। हाल के वर्षो में उदारीकरण तथा ढ़ांचागत समायोजन कार्यक्रमों को हर आर्थिक समस्या के हाल के रूप में देखा जा रहा है। ''उदारीकरण का अर्थ है, औद्योगिक विनियम और बाजार का पूरी तरह खोला जाना जिससे कि अर्थव्यवस्था में सरकार के बाजय बाजार शक्तियां हावी हो जाएँ। बाजार को सुरक्षित रखने तथा आयात के विकल्प खोजने के बजए महसूस किया गया कि भारतीय अर्थव्यवस्था को निर्यातोन्मुखी बनाया जाय।'' उदारीकरण में निहित है– विदेशी व्यापारी का उदारीकरण चूंगी व कर में कमी, खासकर कृषि उत्पादों के निर्यात से सारे प्रतिबंध हटाना। उदारीकरण के लगभग दो दशकों के बाद भूमण्डलीकरण की आंधी ने जहां कुछ महिलाओं को फायदा पहुचाने का काम किया, उससे कहीं अधिक प्रतिशत महिलाओं को विश्व व्यापर की शर्तों के थपेडे ने उनकी पारंपरिक आजिविका के साधनों को छीनकर उन्हें अर्थव्यवस्था से बाहर करने पर भी मजबूर किया है।, पहले से ही सामाजिक असमानता के माहौल में जीती भारतीय महिलाओं पर भूगण्डलीकरण का प्रतिकूल असर अधिक नजर आता है। हमारे देश की आर्थिक व्यवस्था में महिलाओं का सबसे अधिक योगदान कृषि के क्षेत्र में है। याहां अधिकतर खेतिहर कार्य महिलाओं द्वारा किए जाते है।, महिलाओं का ज्ञान और उनकी निपुणता बीजों की सुरक्षा, खाद्य उत्पादन और फसलों की विविधता और खाद्य प्रोसेसिंग में काम आती है। लेकिन विश्व व्यापार संगठन के समझौते के तहत कृषि पर कॉरपोरेट जगत का दबदबा बढ़ा है। जो खाद्य सुरक्षा महिलाओं के काम पर निर्भर करती है।, उसे कॉरपोरेट संबंधित खाद्य संस्कृति ने पीछे धकेल दिया है। ट्रिस (व्यापार संबंधिक बौद्धिक संपति अधिकार) समझौते के तहत ग्रामीण महिलाओं से बीज और जीव विविधता का ज्ञान छीनकर ग्लोबल कंपनियों के हांथों चला गया है।

संस्कृति और भूमण्डलीकरण : विश्वासों परम्पराओं और मूल्यों से संग्रह को संस्कृति कहते है, जिसे समाज क्रमशः अपनी परिपूर्णता के दौरान प्राप्त करते है, और मनुष्यों की पीढ़ियां मूल्यवान धरोहर के रूप में उन्हे अपने बाद वाले पीढ़ियों के लिए रूप छोड जाती है। हर समाज की व्यवस्था तथा आधार उसी समाज की मूल्यवान संस्कृतियां होती है। दूसरी ओर भूमंण्डलीकरण वह व्यवस्था है जिसने अर्थिक, राजनीतिक और संस्कृतिक आयाम से मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया है। भूमण्डलीकरण की एक चुनौती समाजों की विभिन्न संस्कृति पर प्रभाव डालना है। आज राष्ट्रों की संस्कृतियों का एक दूसरे के निकट हो जाना सूचना के आदान प्रदान और तकनीक कम्प्यूटर तथा सेटेलाइट में विस्तार का परिणाम है। प्राचीन समय से मनवीय सभ्यता एवं संस्कृति का केन्द्र होने के नाते एशिया महाद्विप को विश्ववासियों के निकट विशेष स्थान प्राप्त रहा है। इस महाद्विपीय की एक महत्वपूर्ण विशेषता ईरान, चीन, भारत और मैसोपोटमिया जैसे क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों व सभ्यताओं का होना है, जो अपने भीतर राष्ट्रीय, जातिय, धार्मिक और वैचारिक विविधता लिये हए है। अतः भूमण्डलीकरण के इस दौर में मूल्यों की सुरक्षा और एशियाई संस्कृति के स्थान को ऊंचा उठाना। संस्कृति के इस कानून की अद्वितीय विशेषताओं व योग्यता की सही पहचान पर निर्भर है। समझ–बूझ और राष्ट्रों के मध्य सहकारिता के लिए संस्कृति महत्वपूर्ण आधार हैं, और वह सदैव मानवीय सभ्यता में विस्तार की भूमिका रही है, इसी बात के दृष्टिगत देशों के मध्य सांस्कृतिक आदान प्रदान में वृद्धि भी बहुत महत्व रखती है। एशिया महाद्विप ने इतिहास के समस्त कालों में संस्कृति व सभ्यता के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संस्कृति में जो विविधता मौजूद है, उसके दृष्टिगत हर चीज से अधिक आवश्यक संस्कृति से संबंधित विचारों व दृष्टिकोणों के आदन–प्रदान हेतु पश्चिमी देशों के प्रयासों के दृष्टिगत हर समय से अधिक इस समय एशियाई देशों के मध्य सांस्कृतिक मतभेदों को कम करने और उसके मध्य समन्वय व समरसता को मजबूत करना है, और भूमण्डलीकरण की चूनौतियों से मुकाबले के लिए एक संयुक्त निति अपनाये जाने की आवश्यकता है 'अर्थ' का अर्थ यदि बदतला और बिगडता है, तो व्यक्ति और राष्ट्र दोनो को अपनी गरिमा गंवानी पडती है। दासता के दयनीता जीवन का आरंभ 'अर्थायाम' के असंतुलन और उसका गणित गडबड होने के सांथ–सांथ ही होता है। बडे–बडे पराक्रमी, तपस्वी, चिंतक, चरित्रवान व युगपुरूषों कों 'अर्थ' की लपेट और चपेट में आकर अपनी प्रज्ञा, प्रतिभा और पौरूष को बैभाव बेचते और विवस भाव से अन्याय को सहन करते देखा गया है। यह इतिहास–सत्य है। यह शास्त्रों की साक्षी है। यह संतों को संदेश है। महाभारत के पितामहा भीष्म इसकी पुष्टि करते है। आचार्य द्रोणाचार्य इसकी साक्षी है। महाप्रतापी दानवीर कर्ण इसके प्रमाण है। भारशैया पर मृत्यु की प्रतिक्षा कर रहे आपने युग की अद्वितीय तपस्वी, ज्ञानी और धनुर्धर, कुरूवंश के पितामहा भीष्म के जीवन के अतित के अवलोकन और आलोडन में से ही त्रिकालसत्य 'अर्थस्य पुरूषों दासः' के मंत्रवत् सुभाषित का जन्म चला, कि हम कब गुलाम हुए? जब पता चला तब तक हम अपने आप को अधिकांशतः भूल चुके थे। देश के 'कुछ लोगों' को 'जब कुछ' का स्मरण आया, जब उनका स्व उनके मन–मानस में कुलबुलाया तो स्वाधिनता की साध जगी। हजारों लोग मरे, और मार दिये गये तो हम पुनः आजाद हुए, किन्तु यह आजादी केवल राजनीतिक थी। हम केवल वक्तव्य देने, प्रस्ताव पास करने, चुनाव लड़ने, कानुन बनाने, पुलिस और सेना रखने के लिए आजाद हुए, हमारा 'पेट' और 'मन' गुलाम बना रहा। हमने 'स्वाधीन' भारत के 'स्व' को नही चेताया। पहले दिन से ही हमने भीख का कटोरा हांथ में लिया, और भिक्षाम देहि भिक्षाम देहि कहते हुए दुनिया के बड़े–छोटे सभी देशों के दरवाजे पर भीख मांगना शुरू कर दिया। हमने इतना और इतनी बार भीख और कर्जा मांग लिया और मांग रहे हैं, कि भीख मांगना हमारा स्वभाव बन गया है। भीख और ऋण लेना पडता है। आंकडों के बोझ से विचार को बोझिल न करके हम इतना समझ लें की देशी–विदेशी ऋण मिलाकर इस समय कर्जदार हैं। ऋण सेवाओं (व्याज) का भुगतान हमें बहुत ही भारी पड रहा है। हमारी प्रज्ञा और प्रतिभा को पश्चिमी देशों, अमेरिका, विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा का बंदी बना दिया गया है। बहुराष्ट्रीय कम्पनी के माध्यम से अमेरिका और दुसरे देशों ने हमारी राष्ट्रीय, राजनीतिक और आर्थिक संप्रभुता को निगलना शुरू कर दिया है। ये देश भारत को आर्थिक दासता में फसाकर इसे अपनी कठपुतली बनाने की दुर्गामी योजना के तहत कार्य कर हरे है, और हम, हैं कि आपनी अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण करके फुले नही समा रहे है।

उदारीकरण के नाम पर बहुराष्ट्रीय कंपनीयों के लिए अपने देश का द्वार मुक्त करके देश को परावलंबी बनाते हमें लाज नही आती। हमें बताया जा रहा है, कि हम आधुनिक बन रहे है। भारत का अमेरिकीकरण या पश्चिमीकरण करने को आधुनिकीकरण कहने वाले लोग दया के पात्र। ये बेचारे शायद यह नही जानते कि जिस कारण से अबतक भारत की हस्ती को मिटाने पर तुले यह तो संभव है, कि भारत, अमेरिका, कनाड़ा, इंग्लैंड, फ्रांस या जर्मनी जैसा हो जाए, किन्तु भारत वह भारत नही रहेगा, जिसकी हस्ती किसी के मिटाये नही मिली थी, और जो आजतक बरकरार है।

विश्व व्यापार संगठन के समक्ष चुनौतियां

1. विश्व व्यापार संगठन में विकसित राष्ट्रों की हठधर्मिता को रोकने की चुनौती।
2. विश्व व्यापार संगठन की नीतियों को पारदर्शी बनाना।
3. विश्व के छोटे–छोटे राष्ट्रों को संगठन में शामिल करने की चुनौती।
4. अयात–निर्यात नीति में शिथिलता लाने की चुनौती।
5. विभिन्न मुद्दों पर अमल करने की चुनौती।
6. विभिन्न राष्ट्रों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ाने की चुनौती संगठन के समक्ष है।
7. राष्ट्रों के बीच निवेश के लिए बनी नीतियों में शिथिलता लाने पर विचार करने की चुनौती।
8. संगठन को मजमूती प्रदान करने की चुनौती सबसे प्रमुख है।

विश्व व्यापार संगठन की सम्भावनाएँ

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व व्यापार संगठन जैसी संस्था बनने के बाद विश्व के राष्ट्रों में आयात–निर्यात की सम्भावनाएँ अधिक बढ़ गई थी। लेकिन संगठन को जिस दिशा में प्रगति करना था नही कर पाया है। आज विश्व व्यापार संगठन के 20 वर्ष पूर्ण हो चका है। इसके समक्ष अनेक चुनौतियां है तथा सांथ में सम्भावनाएं भी तथा सांथ में सम्भावनाएं भी जूड़ी है। यथा–

1. विकसित तथा विकाशील राष्ट्रों के बीच के मतान्तर को समाप्त किया जाए, जिसमें विश्व व्यापार संगठन की नीतियों पर अमल किया जा सके।
2. भविष्य में मुद्दों पर गतिरोध उत्पन्न हुआ है, उनको दूर किया जाए।
3. कृषि, पर्यावरण, निवेश, बौद्धिक सम्पदा अधिकार जैसे प्रमख मुद्दों को प्राथमिकता दी जाए।
4. आयात–निर्यात को विकसित किया जाए।
5. विश्व व्यापार संगठन के नियमों में पारदर्शीता लाई जाये। आर्थिक मंदी को दूर करने का सामूहिक प्रयास किया जाए।
6. आयात–निर्यात नीति को सरल बनाया जाए।
7. राष्ट्रों के बीच आयात निर्यात की स्वास्थ्य प्रतिस्पर्धा को अधिक बढ़ावा दिया जाए।
8. विश्व व्यापार संगठन के अंतर्गत विश्व के छोटे–छोटे राष्ट्रों को भी इनमें शामिल किया जाए, जिससे कि उनको भी लाभ प्राप्त हो सके।
9. विश्व व्यापार संगठन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में परिलक्षित हो रही समस्याओं जैसे मुद्दों पर भी बल देना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. शर्मा देवेन्द्र, फिर ठगे गए, विकासशील देश, स्वदेशी पत्रिका, नई दिल्ली, अगस्त 2004
2. आचार्य, विद्यानंद दबाव में हुआ समझौता, स्वदेशी पत्रीका, नई दिल्ली, अगस्त 2004
3. Dasgupta Biplap, Structural Adjustment Global ?Trade and the New Political Economy Of Development, Calcutta University,2004
4. Friedman, E., Econonics Law, Oxford University Press, New York, 2003
5. Amorim, C., Cimmentary, The Real Cancun classwork, Busadm, mu. Edu, 2003
6. The Hindu , Delhi, 11 September 2003, P-8.
7. Times of India, New Delhi, 12 Sep 2003, P-15
8. गंगवाल, सुभाष, W.T. O एवं भारत चुनौतियॉ एवं अवसर मंगलदीप, पब्लिकेशन, जयपुर, 2003
9. शर्मा, देवेन्द्र, गैट अू डब्ल्यू टी ओ ए सेज पब्लिकेशन नई, दिल्ली, 1998
10. पाण्डेय, रामनरेश, विश्व व्यापार संगठन तथा भारतीय अर्थव्यवस्था, एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिसट्रीव्यूटर्स, नई दिल्ली,2004
11. दुबे, धर्मेन्द्र, बौद्धिक सम्पदा अधिकार, स्वदेशी पत्रिका, नई दिल्ली, 1998
12. भारद्वाज, रामदेव, भारत और अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, 2003
13. शर्मा, भगवती प्रसाद, विश्व व्यापार संगठन, स्वदेशी पत्रिका, नई दिल्ली, 1997
14. Panchmukhi, V.R. Brahumananda, Development process of indian Ecomomy, Himalaya Publishing House Bombey, 1997
15. Sullivanm paulinem, and jikyeong kang WTO fifth ministerial at cancun, Economic and political weekly, May 2003, P-202
16. उपध्याय, विक्रय, आर्थिक भक्तियों टकराव, स्वदेशी पत्रिका, नई दिल्ली, अक्टूबर, 2003
17. Mathu, archanam the cancun summit at a Glance, Yojnam Nov, 2003
18. Third concept, sep. 2002, P-9-10
19. http://www.ipu.org/sp/z-e/cancun.httm
20. http://www.ipu.org/sp/z-e/cancun.5c.pdf.
21. http://www.wto.org/english/tratop-e/agric-c/nigoti-july03_e.html.